ॐ

श्रीयुग्मनिकुंजविहारिणे नमः

श्रीस्वामी चरणदासजी रचित

श्रीभक्तिसागर ग्रन्थ

परिशिष्ट भाग सहित

अर्थात्

सर्व वाणी का समुच्चय जो कि आज तक भारतवर्ष के किसी यंत्रालय में भी नहीं छपा है

[जिसको]

श्रीमान सर्व गुण निधान श्रीमत शुकसम्प्रदाय सेवक प्रधान पंडित शिवदयालु गौड़ हरि सम्बंधी नाम सरसमाधुरीशरण जयपुर निवासी ने शुद्ध किया

चतुर्थ बार

लखनऊ

केसरीदास सेठ द्वारा

नवलकिशोर प्रेस में मुद्रित और प्रकाशित

सन्-१६१६ ई०